卐 श्री आदिनाथाय नमः 卐

श्री णमोकार महामण्डल विधान का माण्डना

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – श्री णमोकार महाण्डल विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – चतुर्थ–2011

प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. सुखनन्दनजी, ब्र. लालजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी

संयोजन – ब्र. सपना दीदी, आरती दीदी, किरण दीदी

सम्पर्क सूत्र – 9829076085, 9829127533

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141–2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए–107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र–श्री दिगम्बर जैन मंदिर (कुएँ वाला)
जैनपुरी–रेवाड़ी (हरियाणा)
मो. : 09812502062

–: पुण्यार्जकः–
श्रीमती चमन देवी जैन
धर्मपत्नी स्व. श्री महेन्द्रकुमारजी जैन के पुत्र सतीश जैन–रेवाड़ी
महिला समाज–रेवाड़ी (हरियाणा)
108 दिवसीय 108 णमोकार विधान के समापन के उपलक्ष में सहयोग वर्षायोग
समिति दिगम्बर जैन समाज रेवाड़ी

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

''बूँद-बूँद से घट भर जाय''

णमोकार महामंत्र मंत्र शास्त्र की दृष्टि से विश्व के समस्त मंत्रों से अलौकिक है। दुनियाँ की ऐसी कोई ऋद्धि-सिद्धि नहीं है जो इस मंत्र के द्वारा प्राप्त न की जा सके। तीनों लोकों में इसकी तुलना के योग्य कोई दूसरा मंत्र नहीं है। यह समस्त पापों का शत्रु है। संसार का उच्छेद करने वाला है। कर्मों को जड़ मूल से नष्ट करने वाला है। मुक्ति सुख का जनक है और केवलज्ञान का समुत्पादक है।

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज ने ऐसे महामंगलकारी णमोकार मंत्र पर ही अपनी लेखनी से णमोकार महामण्डल विधान की रचना की है। 35 अक्षरी यह णमोकार पूजा विधान वर्तमान पीढ़ी के अनुरूप बहुत ही सरल व मधुर भाषा में रचा गया है। आचार्यश्री द्वारा रचित 40 विधानों में अभिनल कल्पतरु विधान, तत्त्वार्थ सूत्र विधान, सहस्त्रनाम विधान आदि विधानों की श्रृंखला पूरे चातुर्मास में रेवाड़ी के विभिन्न जैन मंदिरों में चलती रही। चातुर्मास में रेवाड़ी में प्रथम बार 108 दिन तक 108 व्यक्तियों द्वारा णमोकार महामण्डल विधान का भव्य आयोजन जैनपुरी के श्री बाहुबली जिनालय में सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही 35 दिवसीय एक करोड़ ग्यारह लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह णमोकार महामन्त्र की जाप्य का अनुष्ठान हुआ।

वर्षायोग समिति व दिगम्बर जैन समाज रेवाड़ी के सहयोग से सभी धार्मिक अनुष्ठान निर्विघ्न सम्पन्न हुए। साथ ही यह भावना हुई कि णमोकार विधान का पुनः प्रकाशन हो तो सतीश जैन व महिला प्रकोष्ठ रेवाड़ी ने इस विधान के पुनः प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया वो आशीर्वाद के पात्र हैं।

पुनः आचार्यश्री के चरणों त्रि-भक्तिपूर्वक नमोस्तु करते हुए भावना भाते हैं कि आप इसी तरह अपनी लेखनी को और भी विशाल रूप देते हुए जिन आगम की प्रभावना करते रहे।

मुनि विशालसागर (संघस्थ : आचार्यश्री विशदसागरजी)
वर्षायोग-2011, रेवाड़ी

णमोकार मंत्र की महिमा

एक बार कुमार पार्श्वनाथ वन-भ्रमण करने के लिए गए। एक स्थान पर उन्होंने पाँच-सात पाखण्डी साधुओं को हवन करते हुए देखा। जैसे ही पार्श्वकुमार की दृष्टि हवन कुंड में लकड़ी पर पड़ी तो वे अपने अवधिज्ञान से जान गए कि लकड़ी के अंदर नाग और नागिन हैं। वे तुरन्त पाखण्डी साधु के पास गए और बोलेह्नह्नहे तापस ! इस लकड़ी को तुमने हवन-कुंड में क्यों डाला? देखो इसे, इसमें नाग और नागिन जल रहे हैं?

पाखण्डी साधु ने कहाह्नह्नरे बालक ! तू झूठ बोल रहा है। इसमें नाग और नागिन नहीं जल रहे हैं। पार्श्वकुमार ने कहाह्नह्नयदि तुम्हें विश्वास नहीं हो तो उस लकड़ी को निकालो और चीर कर देखो।

साधुओं ने लकड़ी निकाली और लकड़ी को चीरना प्रारम्भ किया। जैसे ही लकड़ी को चीरा वैसे ही उसमें से अधजले तड़पते नाग और नागिन निकले। तड़पते नाग-नागिन को देखकर पार्श्वकुमार ने उनको णमोकार मंत्र सुनाया। दोनों ने भावों से णमोकार मंत्र सुना और मरण को प्राप्त हो गए।

मरण के बाद नाग और नागिन धरणेन्द्र और पद्मावती नाम के देव और देवी हुए।

(1) जीवन्धर ने मरते समय कुत्ते को 'णमोकार मंत्र' सुनाया था जिससे स्वर्ग गया था। (2) चारुदत्त ने बकरे को मरते समय 'णमोकार मंत्र' सुनाया था तो वह स्वर्ग का देव बना। (3) वृषभदत्त सेठ ने बैल को 'णमोकार मंत्र' सुनाया था तो वह मरकर सुग्रीव के रूप में राजा बना था। (4) तोते को णमोकार मंत्र रत्नमाला ने सुनाया था तो वह मरकर देव बना था। (5) हाथी।

णमोकार मंत्र के व्रत की विधि :- आषाढ़ सुदी सप्तमी से प्रारम्भ कर क्रमशः 7 सप्तमी, कार्तिक वदी पञ्चमी से क्रमशः 5 पञ्चमी, पौष सुदी चतुर्दशी से क्रमशः 14 चतुर्दशी और श्रावण सुदी नौमी से क्रमशः 9 नौमी के व्रत करने पर णमोकार मंत्र में वर्णित 35 अक्षर के 35 व्रत पूर्ण करना चाहिए।

यदि क्रमशः तिथि से व्रत करने में अनुकूलता न हो तो अपनी सुविधानुसार उक्त तिथियों के व्रत पूर्ण करना चाहिए।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्रेशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-
ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन- वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण- कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-
संलग्न- रत्न- किरणच्छवि- धूस- राघ्रिम्।
प्रस्वेद- ताप- मल- मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-
भक्त्या जलै- र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

(चारो कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै- र्मनोरथ- शतैरिव भव्य- पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण- कलशै- र्निखिला- वसानैः।
संसार- सागर- विलंघन- हेतु- सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक- पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि- वर्धमानपर्यन्तं- चतुर्विंशति- तीर्थंकर- परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे.. प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008.. जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे.. तिथौ... वासरे... पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका- श्रावक-श्राविकानां सकल- कर्म- क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

द्रव्यै- रनल्प- घनसार- चतुः समाद्यै- रामोद- वासित- समस्त- दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

अभिषेक मंत्रह्नह्नॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं ह्वीं ह्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रमरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।मृत्युं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वचौरभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वदुष्टभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमृगभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगजमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगोमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमहिषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वधान्यमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगुल्ममारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपुष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेदनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकर्माष्टकं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्रह्रह्रॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घह्रह्र उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।

दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।

अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।

समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।

निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।

भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।

करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।

इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।

निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।

अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल ।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल ।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम ।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान ।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान ।।1 ।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध ।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध ।।2 ।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय ।।3 ।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म ।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म ।।4 ।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव ।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव ।।5 ।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार ।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार ।।6 ।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण ।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान ।।7 ।।

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1 ।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।2 ।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः ।।3 ।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ।।4 ।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।5 ।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।6 ।।

विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7 ।।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्त्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-वितताैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।

जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्रह्र **ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ्य पद प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद : (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

महामंत्र णमोकार पूजा

स्थापना

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
श्रद्धा भक्ति से जो प्राणी, महामंत्र को ध्याते हैं।
सुख-शांति आनन्द प्राप्त कर, शिव पदवी को पाते हैं।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंचनमस्कार मंत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छंद-मोतियादाम)

हमने इस तन को धो-धोकर, सदियों से स्वच्छ बनाया है।
किन्तु क्रोधादि कषायों ने, चेतन में दाग लगाया है।।
अब चित् के निर्मल करने को, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन का काल अनादि से, पुद्गल से गहरा नाता है।
कर्मों की अग्नि धधक रही, संताप उसी से आता है।।
अब शीतल चंदन अर्पित कर, संताप नशाने आए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच नमस्कार मंत्रः

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।

मन्त्रं संसारसारं, त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमन्त्रम्।
संसारोच्छेदमन्त्रं, विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमन्त्रम्।।
मन्त्रं सिद्धि प्रदानं, शिवसुखजननं केवलज्ञानमन्त्रम्।
मन्त्रं श्री जैनमन्त्रं, जपतप जपितं जन्म निर्वाण मन्त्रम्।।2।।

आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते, मुक्तिश्रियोवश्यतां।
मुच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विद्वेषमात्मैनसाम्।।
स्तम्भं दुर्गमनं प्रति, प्रयततो मोहस्य संमोहनम्।
पायात्पञ्चनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता।।3।।

अनन्तानन्त - संसार - सन्ततिच्छेद - कारण्।
जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम।।4।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।5।।

नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति।।6।।

जिनेभक्ति, र्जिनेभक्ति, जिनेभक्तिर्दिने-दिने।
सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु, सदामेऽस्तु भवे-भवे।।7।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अक्षय अखण्ड आतम अनुपम, खण्डित पद में रम जाती है।
स्पर्श गंध रस रूप मिले, उनसे मिलकर भटकाती है।
अब अक्षय अक्षत चढ़ा रहे, अक्षय पद पाने आये हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन काम वासना से वासित, तन कारागृह में रहता है।
आयु के बन्धन में बंधकर, जो दुःख अनेकों सहता है।।
अब काम वासना नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन किया मगर, नित प्रति भूखे हो जाते हैं।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, न ज्ञानामृत हम पाते हैं।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन की आभा के आगे, दिनकर भी शरमा जाता है।
आवरण पड़ा वसु कर्मों का, स्वरूप नहीं दिख पाता है।।
अब मोह अन्ध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तीव्रोदय जब कर्मों का, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
यह जीव शुभाशुभ कर्मों के, फल से सुख-दुःख बहु पाता है।।
अब अष्ट कर्म का यह ईंधन, शुभ आज बनाकर लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर गति में जन्म हुआ मेरा, यह पूर्व पुण्य की माया है।
इसमें भी पाप कमाया है, न मोक्ष महाफल पाया है।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह सरस-सरस फल लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं आठ कर्म के ठाठ महा, जीवों को दास बनाते हैं।
मोहित करके सारे जग को, वह बारम्बार नचाते हैं।।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
हम महामंत्र की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रित कर महामंत्र से, प्रासुक नीर महान्।
शांतिधारा दे रहे, करके हम गुण गान।।

शांतिधारा.....

पुष्पांजलि को पुष्प यह, पुष्पित लिए महान्।
महामंत्र का जाप कर, करने को गुणगान।।

पुष्पांजलि.....

जयमाला

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल।।

(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ।।
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतिस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ।।
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते।।
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते।।
जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण को पाते।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधु ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।
वह समवशरण बनवाते, सब दिव्य देशना पाते।
हे भाई ! श्रद्धा धारो, अपना श्रद्धान सम्हारो।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।

दोहा– महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

णमो अरिहंताणं अरहंतों के बीजाक्षर अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

णमो जिणाणं श्री जिनेन्द्र पद, भाव सहित करके अर्चन।
तीन योग से शीश झुकाकर, चरणों में करते वंदन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।1।।

ॐ ह्रां ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
पूजा अर्चन करके भगवन, हो जावें मम कर्म शमन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।2।।

ॐ ह्रां ''म'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहन्तों का स्वर्ण कमल पर, होता है शुभ गगन गमन।
इन्द्र करें रचना कमलों की, हो भक्ति में पूर्ण मगन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।3।।

ॐ ह्रां ''अ'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षक हैं जो भवि जीवों के, हितकारी हैं श्रेष्ठ वचन।
सौ-सौ इन्द्रों से पूजित हैं, मंगलमय जिनराज चरण।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।4।।

ॐ ह्रां ''र'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हंता कर्म घातिया अनुपम, पाए केवल ज्ञान सघन।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, बने प्रभु जग में अर्हन्।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।5।।

ॐ ह्रां ''हं'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तारणहार कहे इस जग में, मैट रहे भव की भटकन।
विशद हृदय के सिंहासन पर, बैठाकर नित करूँ मनन।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।6।।

ॐ ह्रां ''त'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो णमो अरिहन्ताणं यह, प्रथम रहा पद मंगलकार।
ध्यान जाप करते इस पद का, विशद भाव से बारम्बार।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।7।।

ॐ ह्रां ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों को नमन किया है, जिसमें पद यह रहा महान्।
श्रेष्ठ णमो अरिहंताणं का, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण कमल में वन्दन करते, सुर नरेन्द्र नर इन्द्र मुनीश।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, झुका रहे हम पद में शीश।।8।।

ॐ ह्रां ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री अरहन्त नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो सिद्धाणं सिद्धों के बीजाक्षर अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

णमो श्री सिद्धाणं कहकर, सिद्धों को करते वन्दन।
अष्ट गुणों को पाने हेतु, अर्घ्य शुभम् करते अर्पण।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महल में रहने वाले, सिद्ध सनातन रहे त्रिकाल।
वन्दन करते उनके चरणों, जग के प्राणी हो नतभाल।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों की महिमा है अनुपम, गुण अनन्त के कोष कहे।
काल अनादि हैं अनन्त जो, पूर्ण रूप निर्दोष रहे।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धाम कहा सिद्धालय जिनका, सिद्ध शिला पर कीन्हा वास।
विशद गुणों में लीन हुए जो, किए कर्म का पूर्ण विनाश।।

नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं ''ध'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो-णमो सिद्धाणं बोलो, विशद भाव से करो नमन।
निज आतम की सिद्धि हेतु, सिद्धों का नित करो मनन।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्धों को नमन किया है, वह पद जानो मंगलकार।
ॐ णमो सिद्धाणं पद को, नमन करें हम बारम्बार।।
नित्य निरंजन हैं अविकारी, नहीं गुणों का जिनके पार।
प्राप्त किए जो गुण अविनाशी, उनको वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री सिद्ध नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो आयरियाणं आचार्यों के बीजाक्षर अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

णमो आयरियाणं कहकर, भक्ति में हो जाओ मगन।
इनकी अर्चा करने वाले, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रूँ ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, रत्नत्रय के कोष महान।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, जैन धर्म की हैं जो शान।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रूँ ''म'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यों के पद में वन्दन, करते सब संसारी जीव।
सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, पुण्य कमाते सदा अतीव।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रूँ ''अ'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश कीर्ति की नहीं कामना, जैन धर्म के साधक श्रेष्ठ।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ज्ञानी कहे गए जो ज्येष्ठ।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रूँ ''य'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय को धारण करते, आवश्यक पालैं तप घोर।
विशद धर्म के धारी अनुपम, गुप्ति पालै भाव विभोर।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रूँ ''र'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति धर्म के धारी हैं जो, देते हैं जग को संदेश।
यत्र-तत्र सर्वत्र हमेशा, धर्म का देते हैं उपदेश।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रूँ ''य'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो णमो आयरियाणं, जाप करें या करते ध्यान।
श्रद्धा भक्ति से अर्चा कर, करते प्राणी निज कल्याण।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रूँ ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ णमो आयरियाणं पद, में आचार्यों को वन्दन।
करके भव्य जीव करते हैं, भाव सहित उनका अर्चन।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
आचार्यों की अर्चा कर हम, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रूँ ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री आयरिय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं उपाध्यायों के बीजाक्षर अर्घ्य

(विष्णुपद छन्द)

णमो उवज्झायाणं बोलें, इस जग के प्राणी।
उपाध्याय जी द्वादशांग के, होते हैं ज्ञानी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।1।।

ॐ ह्रौं ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग के उपदेशक की, महिमा हम गाते।
भाव सहित वन्दन करने को, चरणों शिर नाते।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।2।।

ॐ ह्रौं ''म'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय ज्ञान को पाने वाले, ज्ञानी संत रहे।
ज्ञान ध्यान तप करने वाले, पाठक आप कहे।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।3।।

ॐ ह्रौं ''उ'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु स्वरूप तत्त्व के ज्ञाता, श्रद्धा के धारी।
मुक्ति वधु के अमर चहेते, जग जन उपकारी।।

पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।4।।

ॐ ह्रौं ''व'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झरना उर में वात्सल्य का, जिनके सदा बहे।
उनका वास हृदय में मेरे, हर पल सदा रहे।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।5।।

ॐ ह्रौं ''झ'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति यत्न करने वाले हैं, मुक्ति पथगामी।
देव शास्त्र गुरु के होते हैं, अविरल पथगामी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।6।।

ॐ ह्रौं ''य'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार का पद यह चौथा, है मंगलकारी।
मोक्षमहल का ध्यान जाप से, होवे अधिकारी।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।7।।

ॐ ह्रौं ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं पद की, महिमा हम गाते।
उपाध्याय को नमन करें हम, पद में सिरनाते।।
पूजा अर्चा उपाध्याय की, करने को आए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने, भाव सहित लाए।।8।।

ॐ ह्रौं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित श्री उपाध्याय नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❋❋❋

णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधु के बीजाक्षर अर्घ्य

(टप्पा छन्द)

णमो लोए सव्व साहूणं, बोलें सब भाई।
इनकी अर्चा होती जग में, अतिशय सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।1।।

ॐ ह्रः ''ण'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग के राही अनुपम, सब साधु भाई।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, अतिशय हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।2।।

ॐ ह्रः ''म'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकवर्ति जीवों पर हरदम, दया करें भाई।
महाव्रतों का पालन करने, की प्रभुता पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।3।।

ॐ ह्रः ''ल'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दोय तिय चार पाँच छह, रस त्यागें भाई।
इन्द्रिय विषय कषाय जीतकर, तप करते जाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।4।।

ॐ ह्रः ''ए'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, की प्रभुता पाई।
समिति गुप्ति का पालन करते, भाव सहित भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।5।।

ॐ ह्रः ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में किया है जिसने मन को, जैन मुनि भाई।
ज्ञान ध्यान तप साधक मुनि की, महिमा सुखदाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।6।।

ॐ ह्रः ''व'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साध्य और साधक का अन्तर, मैट रहे भाई।
निज आतम में लीन रहो नित, अतिशय है पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।7।।

ॐ ह्रः ''स'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय कमल में वास धर्म का, जिनके है भाई।
क्षमा आदि धर्मों का पालन, करते हर्षाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।8।।

ॐ ह्रः ''ह'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार का पद यह अन्तिम, श्रेष्ठ रहा भाई।
साधु पद के बिना किसी ने, मुक्ति नहीं पाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।9।।

ॐ ह्रः ''णं'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो लोए सव्व साहूणं यह, पद है सुखदाई।
सर्व साधु को नमन है जिसमें, श्रेष्ठ कहा भाई।।
सभी मिल पूजो हो भाई..।
जैनागम में सभी साधुओं, की महिमा गाई-सभी मिल..।।10।।

ॐ ह्रः ''सर्वं'' बीजाक्षर सहित श्री सर्वसाधु नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार मंत्र का महात्म्य- बीजाक्षरों के अर्घ्य

ऐसो पञ्च णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(चौपाई छंद)

ऐसा मंत्र जगत में भाई, और नहीं देखा सुखदाई।
मुक्त हुए कई सुनकर प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।।1।।

ॐ ह्रीं "ऐ" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोई हुई चेतना जागे, निज हित में नित मानव लागे।
महामंत्र की महिमा जानो, मंगलकारी अतिशय मानो।।2।।

ॐ ह्रीं "स" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च परम परमेष्ठी गाए, उनको भाव सहित जो ध्याये।
वह मानव सुख शांति पाए, शिवपुर का वासी बन जाए।।3।।

ॐ ह्रीं "प" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति के दुःख सहे हैं, शेष कोई भी नहीं रहे हैं।
महामंत्र को हम ध्यायेंगे, तभी मोक्ष पदवी पायेंगे।।4।।

ॐ ह्रीं "च" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार है मंत्र निराला, मोक्ष महाफल देने वाला।
जिसकी महिमा जग से न्यारी, भवि जीवों का है उपकारी।।5।।

ॐ ह्रीं "ण" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महामद के जो त्यागी, श्रेष्ठ गुणों के हैं अनुरागी।
इनको भाव सहित जो ध्याते, वह निश्चय से शिवपद पाते।।6।।

ॐ ह्रीं "म" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काँच और कंचन को पाते, हर्ष विषाद न मन में लाते।
इस प्रकार समता उपजावे, महामंत्र शिवपद दिखलावे।।7।।

ॐ ह्रीं "क" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग शोक संताप नशाए, प्राणी के सौभाग्य जगाए।
महामंत्र को जो भी ध्याये, अनुक्रम से शिव पदवी पाए।।8।।

ॐ ह्रीं "र" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक में मंगलकारी, जीवों का है संकटहारी।
महिमा का न पार है भाई, महामंत्र अतिशय सुखदाई।।9।।

ॐ ह्रीं "स" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्णन कोई न कर पाए, महिमा कौन मंत्र की गाए।
काल अनादि जो कहलाए, ध्याकर प्राणी शिवपद पाए।।10।।

ॐ ह्रीं "व" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों को जड़मूल नशाए, पुण्य का जो हेतु कहलाए।
महामंत्र को हम भी ध्यायें, कर्म नाशकर मुक्ति पायें।।11।।

ॐ ह्रीं "प" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वह मानव बहु पुण्य कमायें, महामंत्र को जो भी ध्यायें।
भाव सहित वचनों से गाए, अपने प्राणी भाग्य जगाए।।12।।

ॐ ह्रीं "व" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पहले महामंत्र को ध्याओ, फिर चत्तारि मंगल गाओ।
उत्तम चार लोक में गाए, शरण प्राप्त कर शिवसुख पाए।।13।।

ॐ ह्रीं "प" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार महामंत्र निराला, भव सुख दे शिव देने वाला।
हृदय कमल में इसे सजायें, ध्यान करें शिव पदवी पायें।।14।।

ॐ ह्रीं "ण" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्दर्शन सद्ज्ञान प्रदाता, महामंत्र जग में कहलाता।
मोक्ष मार्ग का कारण भाई, श्रेष्ठ कहा अनुपम सुखदाई।।15।।

ॐ ह्रीं "स" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार बोलें जो प्राणी, हो पवित्र उनकी भी वाणी।
तन-मन भी पावन हो जाए, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।।16।।

ॐ ह्रीं "ण" बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मंगलमय मंगलकरन, महामंत्र नवकार।
ध्यान जाप करके सभी, पाते भव से पार।।17।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गहन करें चिंतन मनन, भाव सहित जो लोग।
महामंत्र नवकार जप, पावें शिवपद योग।।18।।

ॐ ह्रीं ''ग'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चौरासी मंत्र में, कहा गया जो श्रेष्ठ।
णमोकार महामंत्र को, ध्याओ आप यथेष्ठ।।19।।

ॐ ह्रीं ''ल'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार महामंत्र का, ध्यान जाप सुखकार।
करने से जग जीव का, होय विशद उद्धार।।20।।

ॐ ह्रीं ''णं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल की वंदना, करते हैं जो जीव।
परमेष्ठी जिन पाँच की, पावें सौख्य अतीव।।21।।

ॐ ह्रीं ''च'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल धर्म का मूल है, मंत्र अनादि अनन्त।
सिद्ध दशा को पा गए, सन्त अनन्तानन्त।।22।।

ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुधा पर वसु द्रव्य से, पूजा करें त्रिकाल।
परमेष्ठी जो पाँच है, गा करके जयमाल।।23।।

ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिन्धु का जल शुद्ध ले, करके पद प्रच्छाल।
परमेष्ठी जिन पाँच को, वन्दन करूँ त्रिकाल।।24।।

ॐ ह्रीं ''स'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी की वन्दना, करते हम धर ध्यान।
शीघ्र हमें भी प्राप्त हो, वीतराग विज्ञान।।25।।

ॐ ह्रीं ''प'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढलता जीवन जा रहा, किया न निज का ध्यान।
महामंत्र का जाप कर, पाना सम्यक् ज्ञान।।26।।

ॐ ह्रीं ''ढ'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल जग में पाँच हैं, अर्हत् सिद्धाचार्य।
उपाध्याय जिन साधु के, पद पूजें सब आर्य।।27।।

ॐ ह्रीं ''मं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आये तव शरण में, दर्शन करने नाथ।
परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते माथ।।।28।।

ॐ ह्रीं ''ह'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु तत्त्व का ज्ञान दे, जिनका सद् उपदेश।
राही मुक्ति मार्ग के, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष।।29।।

ॐ ह्रीं ''व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश कहे इस लोक में, धर्म के शुभ आधार।
परमेष्ठी हैं पूज्य सब, जग में अपरम्पार।।30।।

ॐ ह्रीं ''इ'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलकारी लोक में, रहे पञ्च परमेश।
करके इनकी वन्दना, जाना है निज देश।।31।।

ॐ ह्रीं ''मं'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्राहक बनकर धर्म के, करते धर्म प्रचार।
देते हैं जो परम पद, जग में मंगलकार।।32।।

ॐ ह्रीं ''ग'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्य बनाकर हम विशद, करते हैं गुणगान।
शिवपद हमको प्राप्त हो, वीतराग विज्ञान।।33।।

ॐ ह्रीं ''ल'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन-वच-तन से पूजते, परमेष्ठी जिन पाँच।
हमको भी शिव राह दो, मिटे कर्म की आँच।।34।।

ॐ ह्रीं ''म'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र इस लोक में, करे कर्म का नाश।
वीतराग जिन धर्म का, नित प्रति करे प्रकाश।।
सर्व मंगलों में प्रथम, मंगल रहा महान।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव से, किया विशद गुणगान।।35।।

ॐ ह्रीं ''सर्व'' बीजाक्षर सहित सर्व पापनाशक नमस्कार मंत्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- महामंत्र नवकार का, किया विशद गुणगान।
गाते हैं जयमालिका, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

महामंत्र शाश्वत है जग में, जिसकी महिमा अपरम्पार।
पाप शाप संताप विनाशक, सर्व जगत् में मंगलकार।।1।।
सर्व अमंगल हरने वाला, तीन लोक में परम पवित्र।
स्वर्ग मोक्ष को देने वाला, जन-जन का हितकारी मित्र।।2।।
सर्व मंगलों में मंगल शुभ, णमोकार पहला मंगल।
क्षण में सर्व अमंगल हरता, करता है जग का मंगल।।3।।
पवित्रापवित्र सुस्थित दुःस्थित, होकर के कोई जाप करे।
निमिष मात्र में अपने सारे, कोटि जन्म के पाप हरे।।4।।
णमोकार शुभ है मंगलमय, तीन लोक में श्रेष्ठ रहा।
भवि जीवों को अभय प्रदायक, भवि जीवों के लिए कहा।।5।।
जिनवाणी की महिमा अनुपम, इसका कौन बखान करे।
शब्द नहीं हैं पास हमारे, कैसे हम गुणगान करें।।6।।
इसके पठन श्रवण से होता, विषय कषायों का परिहार।
चिन्तन मनन से हो जाता है, अन्तर्मन निर्मल अविकार।।7।।

इसके ध्यान मात्र से होता, अन्तर में आनन्द अपार।
उच्चारण करने से होता, मानव जीवन मंगलकार।।8।।
भाव सहित हम परमेष्ठी कृत, महामंत्र को ध्याते हैं।
पूजा अर्चा भक्ति वन्दना, करके हृदय सजाते हैं।।9।।
परमेष्ठी पद हमें प्राप्त हो, विशद् भावना भाते हैं।
तीन योग से वन्दन करने, पद में शीश झुकाते हैं।।10।।
महामंत्र को सुनकर भाई, नाग-नागिनी हुए निहाल।
अंजन जैसे अधम चोर भी, हुए निरंजन पूज्य त्रिकाल।।11।।
सती अंजना ने संकट में, महामंत्र को ध्याया था।
सेठ सुदर्शन ने सूली से, सिंहासन को पाया था।।12।।
सनतकुमार मुनि वादिराज ने, महामंत्र को ध्याया।
कुष्ठ रोग का नाश हुआ, तव कंचन हो गई काया।।13।।
पाँचों पाण्डव को आभूषण, गरम-गरम पहनाए।
महामंत्र का ध्यान किए तो, स्वर्ग मोक्ष फल पाए।।14।।

दोहा- महामंत्र नवकार की, महिमा अगम अपार।
ध्यान जाप करके 'विशद', प्राणी हो भवपार।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि निधन पंञ्चनमस्कार मंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच का वाचक मंत्र महान।
णमोकार है नाम शुभ, करूँ विशद गुणगान।।

(इत्याशीर्वादः)

प्रशस्ति

सर्व लोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान।
महिमा जिसकी अगम है, कौन करे गुणगान।।
दक्षिण में जिसके रहा, भरत क्षेत्र विख्यात।
छह खण्डों से युक्त है, कर्मभूमि हो ज्ञात।।
सुषमा-सुषमा आदि छह, होते जिसमें काल।
जिसके चौथे काल में, जिनवर होंय त्रिकाल।।
चौबिस तीर्थंकर सदा, क्रमशः होते सिद्ध।
तीर्थक्षेत्र सम्मेद गिरि, जग में रहा प्रसिद्ध।।
वर्तमान अवसर्पिणी, का यह चौथा काल।
बीस जिनेश्वर तीर्थ से, मुक्ति पाए त्रिकाल।।
महामंत्र णमोकार के, पैंतिस अक्षर जान।
बीजाक्षर के रूप में, लिक्खा गया विधान।।
पच्चिस सौ पैंतिस रहा, श्रेष्ठ वीर निर्वाण।
श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, को पाया अवसान।।
दो हजार सन् नौ रहा, वर्षायोग विशेष।
भीलवाड़ा नगरी शुभम्, पारसनाथ जिनेश।।
चरण शरण में बैठकर, जोड़े शब्द विशाल।
जिससे यह रचना बनी, होवे पूज्य त्रिकाल।।
बीजाक्षर महामंत्र का, है माहात्म महान्।
विशद भाव से यह किया, लघु धी से गुणगान।।
लघु शब्दों में यह किया, महामंत्र गुणगान।
भूल-चूक को भूलकर, शोध पढ़ें धीमान्।।

आरती

तर्ज : आज मंगलवार है...

महामंत्र नवकार है, मुक्ति का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
महामंत्र .....
महामंत्र के पञ्च पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।1।।
मूलमंत्र अपराजित आदि, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र से, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार.....।।2।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार.....।।3।।
काल अनादि से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।4।।
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अन्जन हुए निरन्जन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार.....।।5।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।6।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
विशद भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।
महामंत्र नवकार.....।।7।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik;p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान